

अपठित गद्यांश

उत्तर भारत में दशहरे और नवरात्रों पर जौ बीजने का प्रचलन है। कुछ लोग देवी के नवरात्रों में पूजते हैं और कुछ लोग दशहरे के पूजन में उन्हें रखते हैं। बहनें भाइयों को उन्हें शिरोधार्य करवाकर उनके सुख-समृद्धि की मंगल कामना करती हैं। इसी प्रकार उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में विशेषतः कुमाऊँ में 'हरेला' मनाया जाता है। यह पर्व सौरमास श्रावण की पड़वा अर्थात् प्रथम दिन को मनाया जाता है। हरेला पर्व के दस दिन पहले पत्तों के दोनों या रिंगाल की टोकरियों में पाँच, सात या नौ तरह के अनाजों को बोया जाता है। जैसे – धान, उड़द, तिल, जौ, सरसों, मक्का, बाजरा आदि। हरेला आने तक ये सात-आठ इंच लंबे होकर सुंदर हरा रंग पा लेते हैं। गाँव भर में इस दिन किसी फलदार या उपयोगी पेड़ों को लगाने की प्रथा भी है। ऐसा माना जाता है कि कोई 'कटिंग' लगाने से भी वह फुटाव ले लेती है।

हम यदि इस पर्व की तह तक जाएँ तो यह प्रकृति के साथ मानव के संबंधों को दर्शाता है। प्रकृति और मनुष्य का सामंजस्य। इन बीजों के अंकुरित होने से अनुमान लगाया जाता है कि इस बार कौन से बीजों के लिए वातावरण सही है। आगामी फसल के लिए क्या उपयोगी है। हरेले में मिश्रित बीज बोने की परंपरा बारहनाजा या मिश्रित खेती के महत्व को भी दर्शाती है। मिश्रित खेती से प्राकृतिक रूप से फसल को सुरक्षित रखा जाता है। यह लोक पर्व सामाजिक समरसता और एकता का प्रतीक है। संयुक्त परिवार में एक ही हरेले बोने की प्रथा परस्पर संगठन दिखाती है।

घर की सयानी महिलाएँ परिवार के सदस्यों को हरेला शिरोधार्य कराती हैं और आशीर्वाद देती हैं – जीते रहो, खुश रहो, हरेले का दिन बार-बार आए, गंगा-जमुना में पानी बहने तक बने रहो। इस मंगल-कामना में प्रकृति और मनुष्य के सह-अस्तित्व और प्रकृति-संरक्षण के प्रति जागरूकता की स्पष्ट झलक मिलती है।

1. हरेले का पर्व सामाजिक समरसता और एकता का प्रतीक है, कैसे?

- क. कई सारे बीज एक साथ बोए जाते हैं
- ख. गाँव के सभी लोग मिलकर खुशियाँ मनाते हैं
- ग. संयुक्त परिवार में एक ही हरेला बोया जाता है
- घ. जौ बीजना या हरेला बोना इसकी ओर संकेत करता है

2. हरेले जैसे पर्व मनाना ग्रामीणों की किन विशेषताओं को उजागर करता है?

- क. दूरदर्शिता, सौहार्द और प्राकृतिक सामंजस्य
- ख. सौहार्द, प्राकृतिक सामंजस्य और परिश्रमी
- ग. प्राकृतिक सामंजस्य, सौहार्द और संवेदनशीलता
- घ. दूरदर्शिता, सौहार्द और निडरता

3. दोनों में कई अनाज एक साथ क्यों लगाए जाते हैं?

- क. एक साथ लगे हुए सुंदर लगने के लिए
- ख. परिवार के सभी लोगों की पसंद के लिए
- ग. वर्षों पुरानी परंपरा निर्वाह के लिए
- घ. अगली फसल की बुआई का अनुमान लगाने के लिए

4. जौ बीजना और हरेला दो अलग-अलग त्यौहार हैं लेकिन भारतीय संस्कृति की मिलती-जुलती तस्वीर प्रस्तुत करते हैं, कैसे? अपनी समझ से उत्तर लिखिए।

5. घर की बुजुर्ग महिलाएँ अपने से छोटी को हमेशा आशीर्वाद देती हैं। छोटी का उनके प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए?

अंक योजना

उत्तर-

1. ग. संयुक्त परिवार में एक ही हरेला बोया जाता है
2. क. दूरदर्शिता, सौहार्द और प्राकृतिक सामंजस्य
3. घ. अगली फसल की बुआई का अनुमान लगाने के लिए
4. बहने भाइयों की समृद्धि की कामना करती हैं वैसे ही बुजुर्ग महिलाएँ भी समस्त परिवार के लिए खुश रहने और आगे बढ़ने का आशीर्वाद देती हैं। दोनों त्यौहार सामाजिक समरसता, प्रकृति और मनुष्य के बीच सह-अस्तित्व और प्राकृतिक संरक्षण के प्रति जागरूकता की झलक देते हैं।
5. बुजुर्गों के प्रति आदर-सम्मान का भाव रखना चाहिए। उनके साथ कुछ समय बिताना चाहिए। उनकी आवश्यकताओं के लिए मदद करनी चाहिए। उनके अनुभवों को नकार कर नहीं बल्कि उनसे सीखना चाहिए।
(इसके अतिरिक्त अन्य उत्तर भी स्वीकार्य)

Created by: Dr. Anuradha, Bangalore